बी0 ए0, खण्ड–।
अर्थशास्त्र (सम्मान)
द्वितीय पत्र

डॉ बिपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पी0 पी0 यू0, पटना।
मो0–9430064013
ईमेल–kbipin29@yahoo. Com

प्रश्न– फीशर द्वारा परिभाशित मुद्रा परिकरण सिद्धांत की आलोचनात्मक व्याख्या करें ?

उत्तर– किसी वस्तु की माँग उसके अंतर्हित उपयोगिता के कारण की जाती है। मुद्रा हलाकि प्रत्यक्ष रूप से किसी व्यक्ति की आवश्यकताओं की संतुश्टि नहीं करती परन्तु इसमें अप्रत्यक्ष रूप से किसी आवश्यकता की संतुश्टि करने की क्षमता है। दुसरे भाब्दों में, मुद्रा की माँग इसलिए की जाती है कि उसमें कय भाक्ति होती है और इसकी सहायता में वस्तुओं को खरीदकर हम अपनी आवश्यकताओं की संतुश्टि कर सकते है। किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रा की माँग इस बात पर निर्भर करती है कि वहाँ पर उपलब्ध होने वाली वस्तुएँ और सेवाओं की कितनी मात्राएँ उपलब्ध मुद्राओं के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। प्रो0 राबर्टहसन के अनुसार " The value of money like any other commodity is determined by its demand and supply" अर्थात् मुद्रा भी एक अन्य आर्थिक वस्तुओं मे से एक है। अतः उसका मुल्य भी अन्य वस्तुओं की भाँति उसकी माँग एवं पूर्ति के द्वारा निश्चित किया जाता है। मुद्रा में माँग के संबंध में हम यह कह सकते है कि मुद्रा का मुल्य उसकी माँग का निर्धारक तत्व होता है।

मुद्रा के मुल्य के संबंध में मुद्रा का परिमाण सिद्धांत सबसे प्राचीन है। और इसकी मो0 इर्विंग फीशर ने अत्यन्त वैज्ञानिक एंव स्पश्ट रूप की व्याख्या की है। प्रो0 फीशर ने अपनी सिद्धांत की व्याख्या में यह स्थापित किया है कि सामान्य मूल्य स्तर एवं मुद्रा का मुल्य वास्तव में मुद्रा के परिमाण द्वारा निश्चित होता है। इनके अनुसार ' मुद्रा के परिमाण में परिवर्त्तन से मुद्रा के मूल्य में सामानुपातिक परिवर्त्तन होता है।' मुद्रा के परिमाण में वृद्धि होने से सामान्य मूल्य स्तर में वृद्धि होने का मूल कारण यह है कि इसमें सम्पूर्ण मौद्रिक आय में वृद्धि हो जाती है तथा सम्पूर्ण आय में वृद्धि होने के कारण व्यय में वृद्धि होती है और इसके परिमाण स्वरूप वस्तु की कीमतें बढ़ जाती है। इस सिद्धांत के अनुसार राश्ट्र की कुल आय अथवा व्यय मुद्रा की मात्रा पर निर्भर करती है। दूसरे भाब्दों में मुद्रा की मात्रा में परिवर्त्तन होने से राश्ट्रीय आय में भी परिवर्त्तन होता है, जिससे स्वभाविक रूप से वस्तुओं की कीमतें प्रभावित होती है।

फिशर की यह व्याख्या है कि मुद्रा की राशि में परिवर्त्तन के साथ–साथ आय में भी उसी अनुपात में परिवर्त्तन होता है और आय का बड़ा भाग वस्तुओं के उपयोग पर व्यय किया जाता है। अतः संपूर्ण व्यय इस बात पर निर्भर करता है कि मुद्रा की कुल राशि क्या है तथा मुद्रा की चलन गति क्या है। इस प्रकार हम पाते है कि फिशर ने न केवल आय सिद्धांत की विवेचना में मुद्रा की कुल राशि का समावेश किया बल्कि मुद्रा की चलन गति का भी समावेश किया फिशर ने मुद्रा परिमाण सिद्धांत को निम्नलिखित समीकरण के द्वार स्पश्ट किया है।

$$P=\frac{MV}{T}$$

P= Price level
M=Quantity of Money
V=Velocity of Circulation of Money
T= Total Transaction

इस समीकरण के अन्तर्गत हम पाते है कि MV तथा T तीनों ही मिलकर मूल्य स्तर पर प्रभाव डालते है। परन्तु इन तीनों में M मूल्य स्तर पर प्रभव डालने वाला सबसे प्रमुख तत्व है यह समीकरण मुद्रा के मूल्य को विश्लेशण का एक महत्वपूर्ण तत्व है जो स्पश्ट रूप से मुद्रा के मूल्य को निर्धारित करने वाली समान्य भाक्तियों की ओर संकेत करता है। इस समीकरण में हम पाते है कि एक अंग में संपूर्ण मौद्रिक व्यय होता है। जिसको हम संपूर्ण मुद्राकी राशि को उसकी चलन गति से गुणा करके निकाल सकते हे। यह Mv द्वारा प्रकट किया जाता है।दूसरी तरफ समीकरण का दूसरा अंग वस्तुओं को कुल कया विकय का मौद्रिक मूल्य है जो कि PT द्वारा दिखाया गया है। अतः यह स्वयं सिद्ध है कि सम्पूर्ण कय–विकय की वस्तुओं का मौद्रिक मूल्य सम्पूर्ण मौद्रिक व्यय के बराबर है।

$$MV=PT$$

इससे हम इस निश्कर्श पर पहुँचते है कि यदि V तथा T अस्थिर रहे और M दुगुना हो जाय तो P भी दुगुना हो जाएगा तथा यदि M तथा T अस्थिर रहे तथा V दुगुना हो जाए तो इस अवस्था में भी P दुगुना हो जाएगा।

Scanned by TapScanner

इस प्रकार हम यह कह सकते हे कि सामान्य मुल्य स्तर तथा मोद्रिक व्यय एक ही दश्ाा में बदलते हे। यदि MV में वृद्धि होती हो P में भी स्वतः वृद्धि होगी।

इस समीकरण को हम एक चित्र संख्या–1 द्वारा भी स्पश्ट कर सकते है।

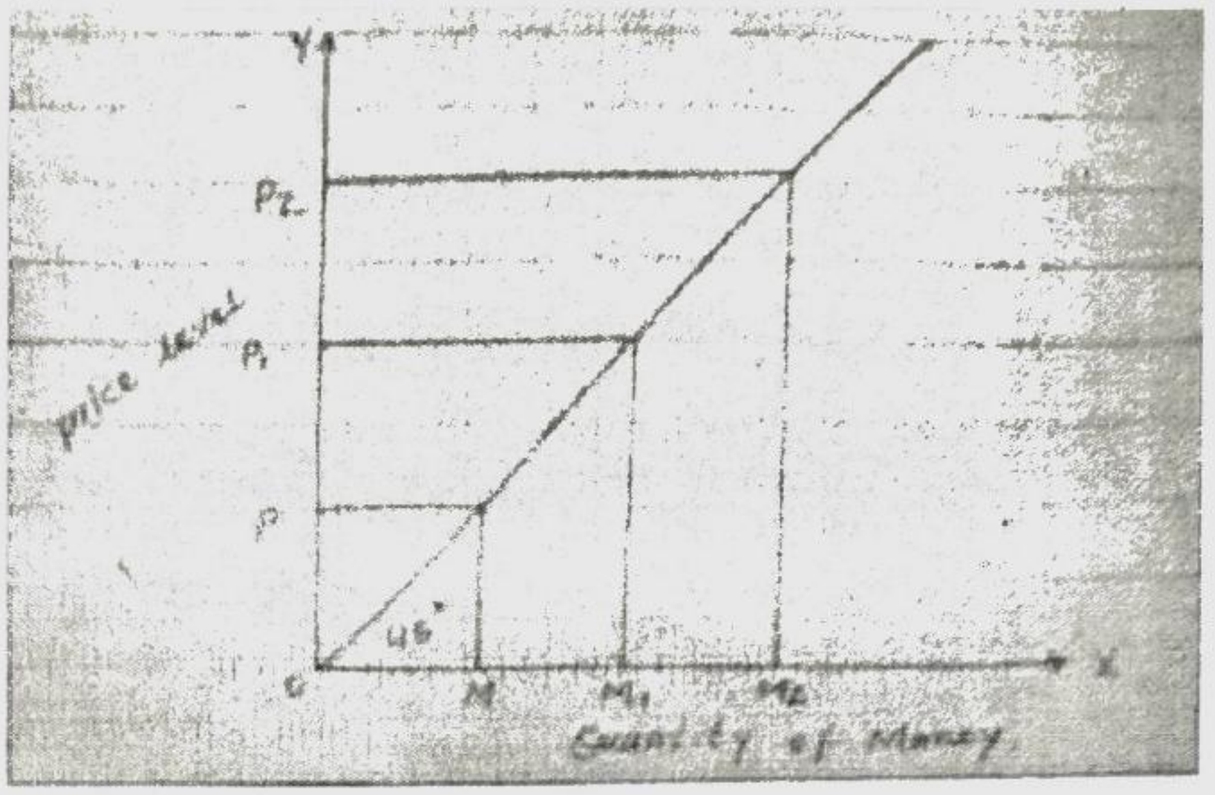

उपरोक्त चित्र संख्या–1 में मुद्रा की राश्ि OM पर स्थापित है तथा भुन्य स्तर OP है। अब मुद्रा के परिमाण में वृद्धि होती है और OM1 हो जाता है तो मूल्य स्तर में भी उसी अनुपात से वृद्धि होती है। इसी प्रकार यदि मुद्रा का परिमाण OM हो जाता है तो मुल्य स्तर भी बढ़कर OP2 हो जाएगा। अतः हम वि श्लेशण रूप से कह सकते है कि मुद्रा के परिमाण तथा मुद्रा के मुल्य में अथवा मूल्य स्तर में समानुपातिक एवं सीधा संबंध है।

सामान्य मुल्य स्तर केवल संपूर्ण मौद्रिक व्यय से ही निर्धारित नहीं होता बल्कि उसमें कय–विकय का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योकि यदि मुद्रा की राश्ि स्थिर हो वस्तु यदि जो वस्तुएँ बाजार में कय– विकय की जाती है यदि इसके परिमाण में वृद्धि हो जाय तो सामान्य मुल्य स्तर घट जाएगा। अतः हम पाते है कि फिश्ार के समीकरण के अनुसार सामान्य मूल्य तीन बातो पर निर्भर करती है।

1. मुद्रा की सम्पूर्ण राश्ि (Total Money Supply)
2. मुद्रा की चलन गति (Velocity of Money)
3. वस्तुओ का कय विकय (Transaction)

यह कारण है कि इर्विंग फिश्ार द्वारा प्रतिवादित मुद्रा के परिमाण सिद्धांत को इस सिद्धांत का कय–विकय रूप भी कहा जाता है।

फिश्ार द्वारा प्रतिवादित मुद्रा परिमाण सिंद्धात की अवास्तविक प्राचवाची के आधार पर आलोचना की गई है जो निम्न है।

1. Ge के अनुसार मुद्रा परिमाण सिद्धांत केवल मुद्रा की पूर्ति पर बल देता है जो कि गलत है क्योंकि हम जानते है कि सामान्य अवस्थाओं में किसी भी वस्तु का मुल्य माँग एंव पूर्ति के द्वारा निश्िचत होता है। हम किसी घोड़े को पानी पीते से रोक सकते है परन्तु आदि उसे प्यास न लगी हो तो पानी पीने के लिए बाघ्य नहीं कर सकते।
2. Keynes के अनुसार फिश्ार का यह सिद्धांत मुद्रा की कय भाक्ति का मूल्यांकन काने में सक्षम नहीं है क्योंकि मुद्रा की माँग के आकार को निश्िचत करते है।
3. Marshall के अनुसार इस समीकरण में मुद्रा के चलन को प्रभावित करने वाले तमाम तत्वों का उल्लेख नहीं किया गया है। इसी प्रकार, Crowther के अनुसार यह समीकरण केवल मुद्रा चलन पर बल्कि कय विकय को प्रभावित करने वाले तमाम अन्य तत्वों को नहीं दिखाता।
4. मूल्य के भाास्त्रिये सिद्धांत के समान ही फिश्ार का यह सिंद्धात के दीर्घ कालीन मूल्य का वि लेशण करता है इस सिद्धांत में दीर्घकाल में माँग तथा पुर्ति की अवस्थाएँ अपरिवर्त्तन है तथा समान को अन्य सभी बाते बदलती नहीं है। अतः यह एक गतिहीन अवस्था की कल्पना है जो कि सत्य नहीं है।
5. परिमाण सिद्धांत यह मानकर चलता है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगारी है और ऐसी अवस्था में मुद्रा की भाक्ति में राश्ि में वृद्धि करने में मूल्य स्तर इसी अनुपात में हमेश्ा परन्तु Keynes के अनुसार जबतक समाज में बेरोजगारी है मुद्रा प्रसार के कारण से रोजगार इसी अनुपात में रहेगा और मुख्य स्तर पूर्ववत बना रहेगा केवल अन्य पूर्ण रोजगार की स्थिति प्राप्त कर भी जाएगी तभी मुद्रा के परिमाण में परिवर्त्तन से मूल्य स्तर प्रभावित होगा।

Scanned by TapScanner

6. इस सिद्धांत मे व्यापार चक्र द्वारा मुल्य में परिवर्त्तन की व्याख्या नहीं की गई है। फीशर के अनुसार व्यापार चक्र मे तेजी की अवस्था इस समय रहती है अब मुद्रा के प्रवाह में वृद्धि होती है तथा इस प्रवाह में कमी के कारण मंदी की अवस्था उत्पन्न होती है।

उक्त आलोचनाओं के बावजूद भी हम यह कह सकते है कि फिशर के मुद्रा का परिभाग सिद्धात मुद्रा के संबंध में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विश्लेशण है जो हमेइस महत्वपूर्ण आर्थिक सस्था के सम्बन्ध में वैशविक जानकारी देता है।

Scanned by TapScanner